तहीय्यतुल वुज़ू और तहीय्यतुल मस्जिद की फज़ीलत

हजरत मुफ्ती अहमद खानपूरी द.ब.

तहीय्यतुल वुज़ू

इस बाब मे वुज़ू के बाद दो रकात के इस्तेहबाब को बतलाना चाहते हे जिस्को तहीय्यतुल वुज़ू केहते हे कोयी आदमी अगर वुज़ू करे तो चूंके वुज़ू नमाज़ की अदायगी का ज़रीया हे वैसे तो उस वुज़ू से जब चाहे नमाज़ पढ सकते हे लेकिन वुज़ू नमाज़ ही के लिये किया जाता हे इसलीये वुज़ू करते ही पेहली ही फुरसत मे नमाज़ अदा कर ली जाये तो ये इस्से फौरी तौर पर फायदा उठाना होगा उस्की भी फज़ीलत हे उसी को बयान करने के लिये रिवायत लाये हे.

हज़रत अबू हुरैरह रदी नकल करते हे के हुज़ूर ﷺ ने हज़रत बिलाल रदी से एक मरतबा पूछा ए बिलाल तुमने इस्लाम मे कोयी ऐसा अमल किया हो तो बतलावो जो तुम्हारी निगाहों मे सबसे ज़्यादा काबिले उम्मीद हो इसलीये के मेने जन्नत मे अपने आगे तुम्हारे जूतों की खडखराहट सुनी हे इस्के जवाब मे हज़रत बिलाल रदी ने कहा मेरी निगाहों मे सबसे ज़्यादा पूर उम्मीद अमल जो मे ने किया वो ये हे

के रात दिन मे किसी वकत भी जब मे वुज़ू करता हूं तो उस वुज़ू से अल्लाह को जो मंज़ूर हो इतनी नमाज़ अदा कर लैता हूं.

इफादात- किसी को ये इश्काल न हो के हज़रत बिलाल रदी जन्नत मे हुजूरﷺ से आगे कैसे हो गये? जवाब ये हे के खादिम भी मख्दूम से आगे चला करता हे और यहां उन्का आगे चलना गोया खिदमत ही के तौर पर हे और ये भी खादिम के लिये इज़्जत की एक चीज़ हे.

इस्से तहीय्यतुल वुज़ू की फज़ीलत मालूम हूयी के ये एक ऐसा अमल हे के अल्लाह के यहां उस्की वजह से हज़रत बिलाल रदी को जन्नत मे इतना उंचा मकाम अता किया गया.

तहीय्यतुल मस्जिद

तहीय्यतुल मस्जिद की तरगीब और वो दो रकात हे जिस वकत भी मस्जिद मे दाखिल हो उस्के पडने से पेहले बेठना ना पसंदीदा हे चाहे तहीय्या की नीय्यत से दो रकात पडे या कोयी फर्ज़ नमाज़ अदा करले या सुन्नते मुअक्कदा अदा करले या और कोयी नमाज़ अदा कर ले.

मस्जिद के आदाब मे से ये भी हे के आदमी जब मस्जिद मे

दाखिल हो तो बेठने से पेहले फौरन दो रकात पडले शाफीओ के यहां तो अगर बेठ गया तो तहीय्यतुल मस्जिद का वकत खतम हो गया लेकिन अहनाफ के यहां भी अफज़ल तो यही हे के बेठने से पेहले पडे लेकिन बेठने के बाद भी दोबारा उठकर पड सकता हे और ये तहीय्यतुल मस्जिद दरअसल तहीय्यतु रब्बील मस्जिद हे यानी मस्जिद का जो मालिक हे यानी अल्लाह उस्के हुजूरﷺ मे हम सलाम कर रहे हे जैसे अगर हम किसी के मकान मे जाये और मकान मालिक सामने मौजूद हो फिर भी उस्को हम सलाम न करे और वैसे ही बेठ जाये तो ये अच्छी बात नही समज़ी जाती हे उसी तरह ये दो रकात दरअसल तहीय्यतु रब्बील मस्जिद हे के मालिके मस्जिद यानी अल्लाह के हुजूरﷺ को हम सलाम कर रहे हे ये भी आदाबे मस्जिद मे से हे.

वैसे भी मस्जिद एक ऐसी जगाह हे जो नमाज़ की अदायगी ही के लिये बनायी गयी हे अब कोयी आदमी ऐसी जगाह मे जाये और नमाज़ पढे बगैर ही वापस चला आये ये अच्छा नही समज़ा जाता जैसे मिसाल के तौर पर मे कहा करता हूं के कोयी आदमी होटल मे जाये और टेबल पर पांच दस मिनट बेठ कर वापस चला आये तो लौग

कया कहेगे होटल तो इसलीये बनायी गयी हे कोयी उसमे आये तो कुछ नाश्ता करले कुछ खाले और खाना नही खाता तो कम से कम एक प्याली चाय ही पी ले ताके होटल मे आने की लाज रेह जाये अगर वैसे ही बेठ कर वापिस आ जावोगे तो ये बडा बुरा समज़ा जाता हे उसी तरह मस्जिद अल्लाह का घर हे और नमाज़ अदा करने ही के लिये बनाया गया हे अब अगर एक आदमी मस्जिद मे आये कुछ देर तक रुके और दो रकात भी न पडे और वेसे ही वापस चला जाये तो ये भी बुरा समज़ा जायेगा हां इतनी बात का खियाल रखना ज़रूरी हे के ये नमाज़ चूंके नफल हे इसलीये अहनाफ के यहां ज़रूरी हे के मकरूह वकत न हो अगर मकरूह वकत होगा तो नही पढ सकते लेकिन शाफी के यहां फजर और असर के बाद भी अगर मस्जिद मे दाखिल हो गया तो पड सकता हे इसलीये के उन्के यहां उस वकत नफल पडने की गुंजाइश हे इसी अल्लामा नव्वी रह ने कोयी कैद भी नही लगाइ.

अब अगर कोयी आदमी मस्जिद मे आने के बाद सीधा फर्ज़ नमाज़ अदा करने लगा जैसे ज़ोहर के लिये आया और देखा के जमात हो रही हे और उसमे शरीक हो गया या दो रकात तहीय्यतुल मस्जिद पडने के बजाये सीधी चार

रकात सुन्नते मुअक्कदा की नीय्यत बांध ली तो कोयी हरज़ की बात नही हे इस सूरत मे तहीय्या वाला मकसद हासिल हो गया जैसे कोयी आदमी होटल मे गया और सीधे खाने का आडर दे दिया पेहले चा या स्टारटर वगैरा कोयी चीज़ नही ली तब भी मकसद हासिल हो जाता हे.

(1) हज़रत अबू कतादा रदी से रिवायत हे के हुजूरﷺ ने इरशाद फरमाया तुम्मे से कोयी आदमी जब मस्जिद मे दाखिल हो तो जब तक के दो रकात न पडले तब तक न बेठे.

(2) हज़रत जाबिर रदी फरमाते हे के मे हुजूरﷺ की खिदमत मे हाज़िर हूवा आप मस्जिद मे तशरीफ फरमा थे उस वकत आपने इरशाद फरमाया दो रकात पडलो.

इफादात: आज कल इस्का रिवाज बहुत कम हो रहा हे मसलन शादी की मजलिस होती हे तो लौग मस्जिद मे आकर बस बेठ जाते हे और आधा घंटा एक घंटा बेठते हे और मस्जिद मे आकर अपना काम निमटा कर चले जाते हे लेकिन दो रकात नही पढते हालांके चाहिये तो ये था के आते ही पेहले दो रकात पढने का एहतेमाम किया जाता इसलीये उस्की तरफ खास ध्यान दिया जाये.

हवाला- हदीस के इस्लाही मजामीन उर्दू से रिवायत का खुलासा किया गया हे